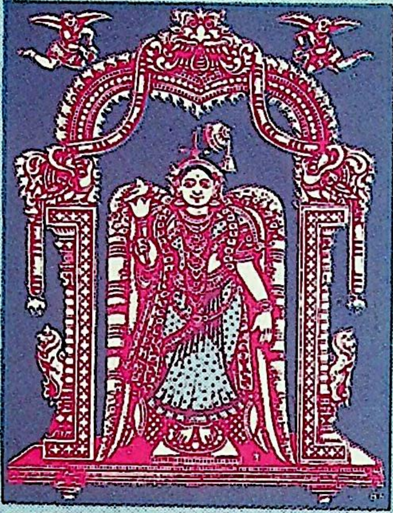

श्रीगोदारङ्गनाथपरब्रह्मणे नमः

श्री गोदा भक्ति चालीसा

रचयिता–

गदाधर पारीक

*****

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

संस्करण : जुलाई २०१२, सम्वत् २०६९.

मूल्य : ५ रुपये मात्र ।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate.
Pune -411 013.

श्री गोदा-भक्ति-चालीसा

॥ दोहा ॥

श्रीविष्णु भगवान् ने, ले बराह अवतार ।
हिरण्याक्ष को मार कर किया भूमि उद्धार ॥
भू-देवी वैकुण्ठ में, तब यह किया विचार ।
अर्चा-विग्रह भक्ति का, जग में करूँ प्रचार ॥

॥ चौपाई ॥

भाव प्रकट प्रभु सन्मुख कीन्हा ।
तब आदेश महाप्रभु दीन्हा ॥
भू-देवी भूतल पर जावो ।
जीवों को मम सन्मुख लावो ॥
करो मूर्ति सेवा विस्तारा ।
इसके हित तुम लो अवतारा ॥

श्री वैकुण्ठ लोक के सारे ।
दिव्य पार्षद सब मम प्यारे ॥
मेरी ही शुभ आज्ञा पाकर ।
लीला स्थल भूतल पर जाकर ॥
धरते नित्य निरन्तर ध्यान ।
करते सदा हरि गुण गान ॥

परम भक्त आलवार कहाते ।
भक्ति मग्न हो मम गुण गाते ।।
तुम भी उन सम भू-पर जावो ।
दिव्य भक्ति रस स्रोत बहावो ।।
श्री नारायण आज्ञा पायी ।
भू-देवी भूतल पर आयी ।।

विष्णुचित्त गरुड़ अवतारा ।
भगवद् अर्पित जीवन सारा ।।
श्री वटपत्र शयन प्रभु देवा ।
विष्णुचित्त नित करते सेवा ।।
प्रातःकाल तुलसी वन जाते ।
तुलसी पुष्प वहां से लाते ।।

माला सुन्दर भव्य बनाते ।
दिव्यदेश मन्दिर ले जाते ।।
करते हार सदा हरि अर्पित ।
जीवन था भगवान समर्पित ।।
सदा सर्वदा हरि गुण गाते ।
अपना जीवन सफल बनाते ।।

दिव्यदेश पावन महान् है ।
श्री विल्लीपुत्तूर स्थान है ॥
श्री गोदा अवतार धाम है ।
वृन्दावन उद्यान नाम है ॥
पूर्व फाल्गुनी कर्कट मासा ।
भक्ति मार्ग कैंकर्य प्रकाशा ॥

तुलसीवन सुन्दर सुखकारी ।
उसमें प्रकटी गोदा प्यारी ॥
भूमि सुता सीता सम जन्मा ।
भू-देवी बनकर गोदाम्मा ॥
पूर्ण कृपा यह प्रभु की जानी ।
विष्णुचित्त प्रिय पुत्री मानी ॥

पिता और पुत्री द्वय मिलकर ।
हार बनाते थे अति सुन्दर ।।
श्रीगोदा प्रभु की प्रिय भक्ता ।
अर्चा विग्रह में अनुरक्ता ।।
नित्य प्रति यह सोचा करती ।
प्रभु को प्रिय क्या है मम भक्ति ।।

तुलसी पुष्प हार कर निर्मित ।
पहले करती स्वयं समर्पित ।।
हार पहन मनमें मुस्काती ।
गोदा दर्पण सन्मुख आती ।।
मुझे प्रभु क्या? अपनायेंगे ।
अनुकम्पा वह दिखलायेंगे ।।

गोदा माला धारण करती ।
ध्यान सदा प्रियतम का धरती ।।
हार पहन निज केश सजाती ।
श्रीहरि को वह सदा रिझाती ।।
मनमें सदा कल्पना करती ।
होगी सफल कभी मम भक्ति ।।

गोदा हार गले में डाला ।
दर्पण सन्मुख आयी बाला ॥
विष्णुचित्त देखा तेहि काला ।
बेटी! तुम यह क्या कर डाला ॥
कैसे धारें प्रभु यह माला ।
तुम प्रसाद इसको कर डाला ॥

विष्णुचित्त मनमें सकुचाये ।
प्रभु के सन्मुख कैसे जाये ॥
पश्चाताप करन मन लागे ।
पहुँच गये फिर प्रभु के आगे ॥
श्रीहरि बोले मत - घबरावो ।
गोदा पहनी माला लावो ॥

विष्णुचित्त भ्रम हुआ निवारण ।
माला की भगवन् वह धारण ।।
फिर गोदा 'तिरुप्पावै' गाया ।
धनुर्मास व्रत नियम निभाया ।।
नित्य प्रातः सब सखी जगाती ।
'तिरुप्पावै' की गाथा गाती ।।

गोदा कर श्रीपति हृदयङ्गम ।
रङ्गनाथ स्वामी श्रीरङ्गम् ॥
गोदा को प्रभु ने अपनाया ।
'कल्याणोत्सव' भव्य मनाया ॥
गोदा मन वांछित फल पाया ।
भक्त 'गदाधर' ने गुण गाया ॥

।। दोहा ।।

श्रीगोदा-रंगेश का, दिव्य सुयश श्री गान ।
भुक्ति मुक्ति शुभ सिद्धिप्रद, भक्तिरस की खान ।।
पढ़े सुने गाये इसे, सब संकट कट जाय ।
श्रीगोदा-रङ्गनाथ की, अविचल भक्ति पाय ।।
श्रीगोदा रङ्गनाथ का, पावन पुण्य चरित्र ।
धनुर्मास की शुभ कथा, श्रीव्रत गान पवित्र ।।

।। श्री गोदा भक्ति चालीसा सम्पूर्ण ।।

० मुद्रक : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई सं० २०४७

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डिंग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS